BLM Academy
Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (NTL)
Ph. No. 05946 - 210831, Mob.: 7520068217

विद्यालयी शिक्षा–एक निवेश

August 2009

समाचार पत्रों व मासिक पत्रिकाओं में अक्सर विद्यालयी शिक्षा पद्धति पर आक्षेप पड़ने को मिल जाते है। कभी बस्ते का बोझ चर्चा का विषय होता है तो कभी विद्यार्थियों में बड़ती अनुशासन हीनता व मादक पदार्थों का सेवन,कभी अच्छे नम्बर लाने के दबाव के कारण आत्महत्या का मामला उछलता है तो कभी शिक्षा में नैतिक शिक्षा के अभाव पर अंगुलियॉ उठती है और विद्यालयों में लिया जाने वाला मनमाना शुल्क तो सबकी पीड़ा का एक मुख्य कारण है ही।

निसन्देह शिक्षा जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है और उसकी गुणवत्ता के साथ समझौता नहीं किया जा सकता, परन्तु चर्चाओं से समाधान निकलने वाला नहीं। आवश्यकता है आवश्यक कदम उठाने की विद्यालयों और अभिभावकों को साथ–साथ।

यह हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि भारत में विद्यालयी शिक्षा का एक हद तक निजीकरण हो चुका है और यह एक व्यवसाय बन चुका है। हम चाहे कितना जोर लगा दें यह व्यवस्था बदलने वाली नहीं हमें इसी व्यवस्था में जीना है तो क्यों न इसी व्यवस्था में सुधार की सोचें।

आज अमीर व गरीब में दूरी बढ़ती जा रही है अमीर और अमीर होता जा रहा है और गरीब और गरीब। मैं इसके लिए पूर्णतः वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को दोष देती हूँ। अमीर अपने बच्चे को अच्छी से अच्छी महंगी शिक्षा देने में सक्षम हैं, इसी कारण उनके पाल्य ऊँचे पदों पर आसीन होते जा रहे हैं। यदि आप किसी व्यावसायिक महाविद्यालय का सर्वेक्षण करेंगे तो आप ही पता लग जायेगा वहाँ निम्न आय वर्ग के कितने विद्यार्थी पहुँये हैं। क्या यह अनुपात उनकी जनसंख्या के अनुपात में है ? कदापि नहीं।

वर्तमान चुनौतियों से जूझने के लिए, विद्यालय में केवल Chalk और talk से नहीं पढ़ाया जा सकता। बहुत सी अन्य सुविधायें देने की जरूरत है, जैसे दृश्य श्रव्य सामग्री जो अध्ययन को सुगम बना सके और जो कि आज के युग में अति आवश्यक है। खेल की सुविधायें ताकि विद्यार्थी स्वस्थ रहें व एकाग्रता बढ़ा सके। ललित कलाओं (Music, dandce & drawing) की सुविधायें ताकि विद्यार्थी अपनी शक्ति को सही दिशा में लगा सकें, हॉबी विकसित करने के लिये पर्याप्त सुविधायें ताकि वे अपनी छिपी प्रतिभाओं को उजागर कर सकें व कला का क्राफ्ट की सुविधा ताकि वे सृजनात्मकता को विकसित कर सकें और इन सब कक्षाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिये आवश्यकता होती है योग्य कुशल व प्रशिक्षित शिक्षक व पर्याप्त इनफ्रा स्ट्रक्चर की।

BLM Academy
Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (NTL)
Ph. No. 05946 - 210831, Mob.: 7520068217

यह एक भ्रान्ति है कि प्राइमरी कक्षाओं में क्योंकि, पाठ्यक्रम आसान होता हैतो उसे कोई भी अध्यापक / अध्यापिका पढ़ा सकता है। शिक्षक का स्वयं का मानसिक स्तर बच्चे की पूरी जिन्दगी को प्रभावित करता है। यही वह समय है जब बच्चे को सही सांचे में ढालने की आवश्यकता होती है जो विद्यार्थी को मनोवैज्ञानिक ढंग से पढ़ा सके, उसकी अध्ययन में रूचि बनाने में सक्षम हो और उसके लिए प्रेरणा का स्रोत हो।

आजकल कॉरपोरेट सेक्टर जहाँ ऊँचे वेतनमान पर कर्मचारी नियुक्त कर रहा है विद्यालयों में तुलनात्मक रूप से अल्प वेतन में अच्छे शिक्षकों की नियुक्ति असम्भव हो गयी है और सम्भव भी है तो वे अपने खर्चो को पूरा करने के लिए विद्यार्थियों को ट्यूशन के लिए बाध्य करते हैं। वे भी वह सम्मान चाहते हैं जो एक अच्छी आय के व्यक्ति को समाज में मिलता है, विद्यालयी शिक्षा से एक लम्बे समय से जुड़े होने के कारणए मैंने स्वयं यह अनुभव किया है कि धनाभाव के कारण एक योग्य शिक्षक को नियुक्त करना व स्थाई रखना कितना मुश्किल है। प्रत्येक विद्यालय इस समस्या से जूझ रहा है।

इस समस्या के दो समाधान हैं पहला विद्यालयों की सहायता के लिए सरकार स्वयं आगे आये। जो विद्यालय इनफ्रा स्ट्रक्चर में सम्पन्न है, उनमें शिक्षक शिक्षिकाओं के वेतन का भार स्वयं सरकार ले, आखिर विद्यालयी शिक्षा है तो सरकार का पूर्ण सहयोग आर्थिक रूप से, विद्यालयी शिक्षा के, देश की प्रगति में योगदान को समझते हुये विद्यालयों को मिलना चाहिए। दूसरा अभिभावक, यदि अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देना चाहते हैं, तो स्वयं अच्छी से अच्छी फीस देने के लिये तैयार रहें ताकि विद्यालय धन के अभाव के कारण गुणवत्ता के साथ समझौता न करें और यदि वे ऐसा करते हैं तो यह उनका अधिकार होगा कि वे जानें कि नियुक्त शिक्षक शिक्षिकाओं की अकादमिक व प्रोफेशनल योग्यता क्या है और कैसी हैं और उन्हें वसूले जा रहे शुल्क के अनुपात में वेतन मिल रहा है या नहीं, शुल्क के नाम पर लिए जा रहे धन का दुरूपयोग तो नहीं हो रहा है।

आज हमें यह स्वीकार करना है कि विद्यालय के विकास व पूर्ण व्यय अभिभावकों को ही वहन करना है और बच्चों की शिक्षा व्यय नहीं एक निवेश है। विद्यालयों में गारंटी शिक्षा सम्भव है यदि अभिभावक धन व संयम से अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होते हुये, विद्यालयों के साथ सहयोग करें। यदि ऐसा होता है तो विद्यालयों को केवल धन के व्यय की पारदर्शिता रखने की आवश्यकता होगी और विद्यालय व अभिभावक मिलकर स्वस्थ व योग्य नागरिक समाज व देश को दे पायेंगे।

श्रीमती रजनी कान्ता बिष्ट

प्रधानाचार्या
बी॰ एल॰ एम॰ एकेडमी